



पहां सिर्फ जीत ही नहीं सब कुछ

ओलिम्पिक की शान रहीं
जेनेट इवान्स ने अपने
प्रतिस्पर्धी तैराकी जीवन में
सिर्फ पदक नहीं, और भी
बहुत कुछ हासिल किया।

पा◆ च ओलिम्पिक पदक जीतने वाली अमेरिकी तैराक जेनेट इवान्स का खिलाड़ी जीवन उपलब्धियों से भरपूर रहा। उन्होंने 1988 में कुल 17 वर्ष की आयु में दक्षिण कोरिया में सियोल ओलिम्पिक में तीन स्वर्ण पदक और 1992 में स्पेन में आयोजित बार्सीलोना ओलिम्पिक में एक स्वर्ण और एक रजत पदक जीते।

वह बताती हैं, “मैं अपनी उम्र के ज्यादातर बच्चों से कम लम्बी थी, इसलिए जब मैंने तैराकी प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेना शुरू किया तो लोग कहते थे कि मैं असली प्रतिस्पर्धा तैराक नहीं बन पाऊंगी। लेकिन मेरा मन कहता था कि इस बात की खास तुक नहीं है। मैं जानती थी कि मुझे में क्षमता है, इच्छा भी है, मुझे लगता था कि मैं यह ज़रूर कर पाऊंगी।”

पहले दो ओलिम्पिकों में वह इसी मानसिकता के साथ गई। “मुझे लगता था कि अगर मैं जीती नहीं तो मैं असफल रहूंगी। मैंने कभी सोचा ही नहीं कि ओलिम्पिक में अपने देश का प्रतिनिधित्व करना ही अपने आप में बड़ा सम्मान है।” सच तो यह है कि 1992 में रजत पदक पाकर वह कुछ निराश ही हुई थीं, “उन दिनों मुझे लगता था कि ओलिम्पिक में भाग लेने का मतलब है, जीतना।”



स्पैन में 1992 के बासींलोना ओलिम्पिक खेलों में 800 मीटर की फ्रीस्टाइल तैराकी स्पर्धा में जीत के बाद जेनेट इवान्स दर्शकों का अभिवादन कर रही हैं।

1996 में जॉर्जिया, अटलांटा में आयोजित ओलिम्पिक उनके लिए अपने देश में हो रहे ओलिम्पिक खेलों में भाग लेने का एकमात्र मौका था: वह याद करती हैं, “मैं 24 बरस की थी और उन दिनों ओलिम्पिक तैराकी में यह ढलती उम्र मानी जाती थी— मेरे लिए तो टीम में चुने जाना ही बहुत बड़ी चुनौती थी।”

उनके प्रशिक्षक और माता-पिता ने उन्हें समझाया कि “तुम्हें अटलांटा में अपने देश में ओलिम्पिक की भावना को अनुभव करने के लिए तैरना है, यह अनुभव पाने के लिए तैरना है कि जीवन केवल जीतने के लिए नहीं है।” लेकिन जेनेट सिर्फ़ जीतना ही चाहती थीं। “जीतना कौन

नहीं चाहता? लेकिन जब तक, मैं बहुत तैर चुकी थी, बहुत से कारणों से मैं स्वर्ण पदक जीत पाने लायक नहीं बची थी।”

उन्हें अटलांटा में पदक नहीं मिले लेकिन लगातार तीन बार ओलिम्पिक में भाग ले पाने तैराकी के क्षेत्र में एक दुर्लभ उपलब्धि है। “अटलांटा में मैंने सीखा कि जीतना ही सब कुछ नहीं है। अपने देश का प्रतिनिधित्व करना, अपने स्तर पर श्रेष्ठतम प्रदर्शन देना, और परिणाम से संतुष्ट रहना भी ठीक है। मैंने यही किया।”

हाल ही में यूएसइनफो से एक वेबचैट में जेनेट इवान्स ने अपने संघर्षों, तैराकी के क्षेत्र में हुए विकास और ओलिम्पिक के बाद अपने जीवन के

बारे में बात की।

मैं जानना चाहता हूँ कि आप तैराक कैसे बनीं? आप किस चीज़ से प्रभावित हुईं?

मैं तैराक इसलिए बन पाई क्योंकि मेरे माता-पिता तैरना नहीं जानते थे। वे जब कैलिफोर्निया में रहने लगे तो हमारे मकान के पीछे एक तरणताल था। मेरे मातापिता ने तय किया कि मेरे दोनों बड़े भाइयों को और मुझे ताल में डूबने से बचाने के लिए हमें तैराकी सिखाना ज़रूरी है। मुझे 14 महीने की उम्र में ताल में डूबने के चारों स्ट्रोक सीख चुकी थी। मेरी मां आज भी तैरना नहीं जानतीं और हम लोग इस बात को लेकर

ज्यादा जानकारी के लिए:

जेनेट इवान्स

<http://www.janetevans.com/>

एलजेडआर रेसर

<http://speedo80.com/lzr-racer/features/>

उन्हें काफी चिढ़ाते हैं कि बेटी तो ओलिम्पिक चैम्पियन है और मां तैर नहीं सकती। मुझ पर सबसे अधिक प्रभाव माता-पिता का रहा है। उन्होंने मुझे मेरे सपने पूरे करने में मदद दी लेकिन यह दबाव कभी नहीं रखा कि मुझे तैरना ही है। मेरी तैराकी को लेकर वे गम्भीर थे लेकिन हद से ज्यादा गम्भीर नहीं। इससे मैं चीजों को एक सही परिप्रेक्ष्य में देखना सीख पाइ। मैं अपने लक्ष्यों से पीछे रह जाती तो वे मुझे प्रयास करते रहने को प्रेरित करते और अधिक हताश न होने देने देते। आखिर तैराकी एक खेल ही तो है!

खेलों में भाग लेने वाली लड़कियों को आपकी क्या सलाह है?

मैं सोचती हूं कि लड़कियों के लिए खेल स्पर्धाओं में भाग लेना अद्भुत है। एक किशोरी के तौर पर मैं जानने लगी थी कि मैं लड़कों के साथ स्पर्धा में उत्तर सकती हूं, जो ठान लूं वह कर सकती हूं। खेलों से मुझे निश्चयात्मकता और आत्मविश्वास मिला, मैंने लक्ष्य निर्धारित करना सीखा।

मैं ओलिम्पिक स्तर की प्रतिस्पर्धा में भाग न भी लेती तो भी खेल ने मुझे रोज़मर्रा के जीवन में सफलता दिलाने वाले कौशल दिए। मैं हर लड़की को खेलों में भाग लेने को प्रोत्साहित करती हूं।

नई स्विमसूट प्रौद्योगिकी के बारे में आप क्या सोचती हैं? क्या नई सामग्रियां खेल के लिए अच्छी हैं?

मैं मानती हूं कि नए स्विमसूट तैराकी में एक नया कदम हैं। उनका उपयोग करने वाले तैराक बताते हैं कि इनके कारण वे तेज़ी से तैर पाते हैं और उन्हें लगता है कि वे पानी की सतह पर तिर रहे हैं। कुछ लोगों को लगता है कि तैराकी पुराने स्विमसूट में ही की जानी चाहिए, नए स्विमसूट खेल के हित में ठीक नहीं हैं। लेकिन मुझे लगता है कि स्विमसूट एक नई प्रौद्योगिकी मात्र ही तो है। लंदन में होने वाले नए ओलिम्पिक के आयोजन तक और बेहतर और तेज़ स्विमसूट आ जाएंगे।

बहुत से लोगों को यह बात मालूम नहीं है लेकिन जब मार्क स्पिट्ज (नौ बार ओलिम्पिक स्वर्ण पदक विजेता) तैरते थे तब तक तैराकी के गॉगल नहीं बने थे। मार्क कुल दो-तीन घंटे ही

तैर पाते थे। गॉगल्स का “आविष्कार” हुआ तो तैराक और अधिक लम्बे समय तक अभ्यास करने लगे और मार्क के सभी रिकॉर्ड टूट गए। यह केवल प्रौद्योगिकी के विकास के कारण सम्भव हुआ। इस विकास के कारण अपने रिकॉर्ड टूटने से खिलाड़ी बहुत खुश नहीं होते लेकिन इन्हें रोका भी नहीं जा सकता...।

अपने अंतिम ओलिम्पिक के बाद से आप क्या कर रही हैं? क्या आप अब भी स्पर्धाओं में तैरती हैं?

अब मैं तैराकी स्पर्धाओं में भाग नहीं लेती और शुक्र है कि मुझे अगली स्पर्धा की तैयारी के लिए

के कर्मचारियों को भी सम्बोधित करती हूं। मैं इस बात पर जोर देती हूं कि पदक जीतना और अपने देश की राष्ट्रधुन सुनना अद्भुत अनुभव हैं लेकिन असली बात है संसार भर के खिलाड़ियों का अपनी क्षमता के अनुरूप सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए एकजुट होना। मैं मानती हूं कि अक्सर जीतने को हद से ज्यादा महत्व दिया जाता है लेकिन खिलाड़ी के तौर पर सबसे महत्वपूर्ण बात है अपना श्रेष्ठतम प्रदर्शन।

उभरते तैराकों को आपकी सलाह!

तैराकी एक बेहद कठिन खेल सिद्ध हो सकता है। आप घंटों ठंडे पानी में, अकेले, तलहटी पर खिंची काली रेखा को ताकते तैरते हैं। दूसरी ओर यह आपके शरीर को मजबूत बनाता है। इसके बहुत से लाभ हैं। तैराकी में वर्कआउट आप के प्रदर्शन को बेहतर बनाते हैं, प्रतियोगिताएं शारीरिक और मानसिक स्तर पर श्रेष्ठतम क्षण उपलब्ध करवाती हैं। यह अपने आप में, बहुत आनन्ददायक है।

क्या इस बीच तैराकी में बदलाव आए हैं?

ढेरों बदलाव आए हैं! जैसा कि मैंने कहा हर समय नई प्रौद्योगिकियां आती रहती हैं। लेन लाइनों की शुरूआत हो या तैराकी के गॉगल्स की, या फिर ये नए एलजेडआर रेसर स्विमसूट हों, पानी में रफ्तार बढ़ाने के नए-नए उपाय आते रहते हैं।

इंटरनेट के कारण तैराकी के शौकीन हफ्ते में सातों दिन, चौबीसों घंटे इस खेल की जानकारी पा सकते हैं, तैराक संसारभर में बिखरे अपने प्रशंसकों से जुड़े रहते हैं।

आपने ओलिम्पिक के दौरान दूसरी संस्कृतियों से क्या सीखा?

मुझे लगता है कि ओलिम्पिक में भाग लेने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि आप दुनियाभर में दोस्त बनाते हैं। ओलिम्पिक में जाकर अन्य एथलीट के देशों और संस्कृतियों के बारे में जानना बेहद अनोखा अनुभव होता है। ओलिम्पिक गांव में आप 10,000 खिलाड़ियों के साथ रहते हैं और खाना खाते, टहलते हुए आपको दूसरे देशों के लोग मिलते ही हैं।

अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेने पर घूमना भी खूब होता है। मैं 14 बरस की उम्र में पहली बार अमेरिका से बाहर मास्को गई थी। यह अनुभव मेरे लिए बहुत अहम रहा। इसने दूसरी संस्कृतियों और परम्पराओं के बारे में मेरी आंखें खोलीं।

4

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।



घंटों तैरना नहीं पड़ता। मेरा सौभाग्य ही है कि मैं अब भी ओलिम्पिक आंदोलन से जुड़ी हूं। मैं बरसों ओलिम्पिक प्रायोजकों से जुड़ी रही और ओलिम्पिक के अपने अनुभवों के बारे में जनसभाओं में बोलने के लिए संसारभर में घूमी। मैं वैश्विक तैराकी महासंघ फिना की एथलीट कमेटी की अध्यक्ष भी हूं।

क्या ओलिम्पिक पदक विजेता के नाते आपको प्रोत्साहित करने वाले अपने अनुभवों के बारे में बोलने के लिए बुलाया जाता है? कहां और किस विषय पर?

मैं युवाओं के साथ अपने अनुभव साझे करना सब से ज्यादा पसन्द करती हूं। ओलिम्पिक आनंदोलन के प्रायोजक कार्पोरेशन और कम्पनियों